मछली पकड़ने बारे

हिमाचल में एंगलिंग–

समाज के अनेक वर्गों से सम्बन्धित असंख्य प्रकृति प्रेमियों के लिये एंगलिंग एक मनोरंजन का स्त्रोत है।

पश्चिमी देशों में एंगलिंग को खेल के रूप में चिकित्सा अधिकारियों द्वारा मान्यता दी गई तथा अधिक से अधिक लोग घरों से निकलकर इस शौक के लिये अपने कौशल को आजमा रहे हैं। 90 के दशक में एंगलिंग ब्रिटिशों का मनपसंद खेल बन गया तथा इसी कारणवश विदेशी प्रजातियां जैसे कि ब्राऊन ट्राऊट और रेनबो ट्राऊट भारतीय नदियों तथा धाराओं में स्थानान्तरित की गई। भारतीय जलों में ट्राऊट प्रजातियां न केवल स्थापित हुई, बल्कि अत्यधिक ऑक्सीजन वाले जलों तथा अच्छी इकोलॉजी के कारण तेजी से विकास कर प्रजनन भी किया।

स्थानीय महाशीर (Tor putitora) के साथ विदेशी ट्राऊट (salmo trutta fario & Salmo gardnerii) ने यूरोपीय एंगलर को मछली पकड़ने के अति उत्तम अवसर उपलब्ध करवाये ।

साहित्य में हिमाचल प्रदेश के नदी नालों में एंगलरों या मछुआरों द्वारा पकड़ी गई मछली का वर्णन किया गया है। वर्ष 1897 में थॉमस ने "रॉड इन इंडिया" नामक पुस्तक में उत्तरी भारत की नदियों में अपने महाशीर पकड़ने के अनुभव का वर्णन किया। बाद में इस अद्वितीय खेल के कारण अत्यधिक लोग इस महाशीर के खेल को पसंद करने लगे।

दो महत्वपूर्ण प्रकाशन "एंगलर इन इण्डिया" तथा "सरकम वैंटिंग द महाशीर" में मछली पकड़ने के स्थान तथा उपयुक्त कांटों के बारे में सूचना दी गई थी। तत्पश्चात् होरा ने 1957 में प्रकाशनों की एक श्रृंखला में भारतीय क्रीड़ा मात्स्यिकी के इतिहास तथा नियमों का उल्लेख किया।

सीर खड्ड पर एंगलिंग (दायें से बायें की ओर) : मियां मान सिंह (नैक टाई पहने हुए), लैफटिनैंट गर्वनर पंजाब, सर मालकम हेली तथा लेडी गर्वनर (सौजन्य बिलासपुर– थ्रू दा सेंक्थयूरीज़ पेज न0 568 लेखक मिस्टर शक्ति सिंह चंदेल)।

हिमाचल के जलों में एंगलिंग–

हिमाचल प्रदेश की धाराओं को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है:–सामान्य जल एवं ट्राऊट जल। जो क्रमानुसार 2400 किलो मीटर तथा 600 किलो मीटर तक लम्बे है। क्रमानुसार –

प्रदेश की प्रमुख नदियां हैं– ब्यास, सतलुज, रावी, तीर्थन, सैंज, ऊहल, बासपा, पब्बर, लम्बाडग, गिरी, राणा, न्यूगल गज, बनेर, बाता इत्यादि।

इन नदियों में पाई जाने वाली प्रमुख प्रजातियां हैं– ट्राऊट, महाशीर, निमाकिलस(Nemacheilus), बेरिलस(Barilus), साइजोथोरेसिड, क्रोसोकिलस, गलिपटोथोरेक्स प्रजातियां इत्यादि। इन नदियों में मछली पकड़ना राज्य मत्स्यपालन अधिनियम के तहत व्यवस्थित है। ट्राऊट जलों में लाइसेंस केवल बंसी और डोरी द्वारा अनुमोदित है। परन्तु सामान्य जलों में दोनों बंसी और डोरी तथा कास्टनैट द्वारा मछली पकड़ी जा सकती है। मत्स्य पालन विभाग ने ट्राऊट और महाशीर की क्रीड़ा मात्स्यिकी को बढ़ावा देने हेतु निम्नलिखित हिस्सों की पहचान की है।

ट्राऊट जल

नदी का नाम	**खिंचाव**	**धारा लम्बाई (कि.मी. में)**
ब्यास	**कटराईं से मनाली**	18
तीर्थन	लारजी से नागनी	20
सैंज	लारजी से रोपा	22
लम्वाडग	बरोट से लोहारडी	6

ऊहल	बरोट से कोठी खड्ड	10
रावी	होली से मुख्य पुल	5

महाशीर जल

नदी का नाम	**खिंचाव**	**धारा लम्बाई (कि.मी. में)**
ब्यास	सेरी मुलग से विनवा और ब्यास संगम तक	5
ब्यास	हरसीपतन से ब्यास की सहायक नदी कुनाह के संगम तक	10
ब्यास	चम्बापतन	5
ब्यास	कुरान	5
ब्यास	देहरा गोपीपुर	10
ब्यास	बनेर	5
गिरी	बाटा	

हिमाचल में साहसिक एंगलिंग :–

हिमाचल प्रदेश देवताओं का निवास, बर्फ से ढका हुआ, पर्यटकों का सपना होने के साथ–साथ एंगलरों के लिए स्वर्ग जैसा भी है। इसके उतर में कुछ बेहतरीन ट्राऊट धारायें हैं–

रोहडू घाटी में पब्बर, सांगला घाटी में बासपा, बरोट घाटी में ऊहल, तथा कुल्लू घाटी में ब्यास और उसकी सहायक नदियां ब्राऊन ट्राऊट तथा रेनब्रो ट्राऊट में समृद्ध हैं।

कांगड़ा घाटी की नदियां तथा धारायें महाशीर पकड़ने के लिए प्रसिद्ध हैं। इन नदियों में 32 से 40 किलो मीटर लम्बे एंगलिंग स्पॉट्स हैं, जहां मछली को आसानी से पकड़ा जा सकता है। एंगलिंग से जुड़े नियम काफी उदार हैं तथा शुल्क भी नाममात्र है। प्रत्येक एंगलर लाइसैंस पर एक दिन में 6 ट्राऊट पकड़ सकता है। परन्तु एक ट्राऊट 40 सैंटीमीटर से कम आकार की नहीं होनी चाहिए। ट्राऊट पकड़ना प्रत्येक वर्ष के एक नम्बर से 28 फरवरी तक प्रतिबंधित होता है।

ट्राऊट मछली पकड़ना :– हम पहले उन स्थानों नदियों व धाराओं की चर्चा करते हैं। जहां आसानी से ट्राऊट को पाया जा सकता है।

रोहड़ू:– शिमला से 120 किलो मीटर दूर पब्बर नदी के दायें किनारे पर मछली पकड़ने का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है। यह केन्द्र ऊपरी धारा की ओर रोहड़ू से 50 किलो मीटर की दूरी पर पब्बर की सहायक नदी आंध्रा के बायें किनारे पर स्थित है।

चिड़गांव :– विश्राम करने के लिए एक आदर्श स्थान होने के साथ मछली पकड़ने का प्रमुख केन्द्र है। कुछ अन्य स्थान जहां मछली पकड़ी जा सकती है सीमा 5 किलो मीटर, माडील 10 किलो मीटर, सांधसु 70 किलो मीटर, टीकरी 21 किलो मीटर तथा धमवाड़ी 24 किलो मीटर की दूरी पर स्थित हैं।

बासपा नदी हिमालयन पर्वत माला के हिमनद से उत्पन्न होकर सांगला या बासपा घाटी से होकर बहती है। सांगला घाटी पश्चिमी हिमालय की सबसे खूबसूरत घाटियों में से एक है। बासपा नदी झरनों की एक श्रृंखला बनाती है तथा इसमें ट्राऊट के लिए बहुत सारे छोटे–छोटे तालाब हैं। ऊंचे पहाड़ों से घिरा हुआ तथा किन्नर कैलाश का शानदार दृश्य प्रदान करने वाला सांगला गांव लोक निर्माण विभाग तथा वन विभाग के पूर्णतः सुसज्जित विश्रामगृहों के साथ मछली पकड़ने के लिए एक सुविधाजनक स्थान हो सकता है। एक मंन्दिर, बौद्ध गोंपा तथा प्राचीन कामरू किला कुछ अन्य आकर्षण हैं, जिन्हें एंगलर को भूलना नहीं चाहिए। सांगला शिमला से 250 कि.मी. दूर है तथा नियमित बस सेवा के साथ जुड़ा हुआ है।

बरोट (मण्डी): शिमला से 200 कि.मी. तथा मण्डी से 75 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यह न केवल खूबसूरत जलाशय तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि ऊहल नदी जो ब्यास की एक सहायक नदी है, में पाई जाने वाली ट्राऊट के लिए भी जाना जाता है। मछली पकड़ने के सबसे अच्छे स्थानों में से कुछ इस प्रकार हैं– लुहान्दी, पूर्ण हैचरी, लचकान्दी, टिक्कर, बल्ह तथा कमान्द। बरोट के अलावा, पण्डोह बान्ध से लेकर औट तक सम्पूर्ण जलाशय ट्राऊट मछली पकड़ने के लिए अच्छा माना जाता है।

हिमालय की सबसे खूबसूरत घाटियों में से एक कुल्लू घाटी में ब्सास तथा उसकी सहायक नदियां जैसे कि– सरवरी, पार्वती, सजोंन तथा फोजल ट्राऊट मछली पकड़ने के अच्छे अवसर प्रदान करती हैं। सैंज तथा तीर्थन नदियां लारजी के पास ब्यास नदी से मिलती है तथा ये भी प्रमुख ट्राऊट धाराएं हैं। मनाली से भून्तर तक कुछ बेहतरीन ट्राऊट पकड़ने के स्थान हैं जैसे कि– पतलीकुहल, कटराईं तथा रायसन। पतलीकुहल तथा बटाहर में ट्राऊट हैचरियां भी स्थापित की गई हैं। पार्वती नदी में भी अनेक स्थानों पर ट्राऊट पकड़ने के लिए उत्तम अवसर मिलते हैं। कुल्लू के लिए चण्डीगढ़ तथा दिल्ली से नियमित उड़ाने हैं।

महाशीर पकड़ने बारे– ट्राऊट व्यजंनों के स्वादिष्ट आभास के बाद अब अपेक्षाकृत कम ऊंची कांगड़ा घाटी जो कि धौलाधार पर्वत माला के आंचल में स्थित है तथा बारहमासी वर्फ से तथा फलों के पेड़ों से ढकी हुई है, के बारे में जान लेते हैं। कांगड़ा महाशीर के निवास के रूप में जाना जाता है तथा विभिन्न एंगलर जो बड़ी मछली पकड़ने में दिलचस्पी रखते हैं, उन्होनें इस मछली के बारे में अनेक अनुभव प्रस्तुत किये हैं। ब्यास नदी तथा पौंगडैम में एंगलरों के लिए कई आकर्षक केन्द्र हैं। महाशीर के अलावा मल्ही, सोल, बचवा, सिंघारा इत्यादि भी उपलब्ध हैं। हालांकि, कई स्थानों पर तथा सहायक नदियों में महाशीर उपलब्ध है, परन्तु निम्नलिखित बीटों को बेहतरीन माना जाता है :–

सारी मरोग– बिनवा नदी का ब्यास नदी के साथ संगम स्थल। यह जगह शानदार आकार की मछली के लिए जानी जाती है जहां पर कई गहरे तालाब तथा पत्थरों में छिपने के लिए स्थान बने हैं। यहां पर पालमपुर, अन्द्रेटा तथा जयसिंहपुर से पहुंचा जा सकता है। सारी मरोग गांव से 3 कि.मी. लम्बा 45

मिनट तक का पैदल रास्ता है जिसके द्वारा एंगलिंग के स्थान तक पहुंचा जा सकता है।

हरसीपतन और नादौन के बीच का स्थान–यहां अनेक बीटें हैं जहां पालमपुर, सवराना, थुरल सड़क द्वारा आसानी से पंहुचा जा सकता है, प्रसिद्ध स्थान हैं–मन्ध खड्ड, संगम, लम्बागांव तालाब, आलमपुर के पास नियोगल संगम तथा नादौन से 2 कि.मी. ऊपर अम्बटर ।

चम्बापतन– ज्वालामुखी से सड़क के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। 8.5 कि. मी. के बाद तीन अच्छे स्थान हैं – चम्बापतन गांव का तालाब, चम्बापतन गांव के विपरीत कालेश्वर बीट तथा ऊपरी चम्बापतन। ये सभी स्थान सुरक्षित मछली पकड़ने के स्थान हैं तथा एक दिन में इन सभी स्थानों पर मछली नहीं पकड़ी जा सकती।

कुरू– कुरू गांव में दो मछली पकड़ने के स्थान हैं जहां नदी के किनारों से पहुंचा जा सकता है। कुरू तालाब एक छोटी खड्ड के ब्यास में मिलने से बनता है। यह गांव के एक कि.मी. ऊपर है तथा यहां कई असाधारण मछलियां पकड़ने का अनुभव रहा है। यहां पर 3 कि.मी. लम्बे पैदल रास्ते से पहुंचा जा सकता है, जो देहरा–ज्वालामुखी सड़क पर स्थित है।

देहरा बांध और पौंग जलाशय :–

पौंग जलाशय देहरा बांध तक वर्ष भर मछली पकड़ने के अच्छे अवसर प्रदान करता है। पौंग जलाशय में पठानकोट से जसूर होकर, चण्डीगढ़ से तलवाड़ा होकर तथा धर्मशाला से देहरा व नगरोटा सूरियां होकर पहुंचा जा सकता है। आशनी धारा का गिरी नदी से मिलने तक का क्षेत्र सोलन तथा सिमौर जिले में पड़ता है, तथा मछली पकड़ने के रमणीय अवसर प्रदान करता है। सोलन से 30 किलो मीटर दूर राजगढ़ मार्ग पर गौरा नाम का स्थान विशाल महाशीर के लिए जाना जाता था। यह जगह पूर्व काल के पटियाला शासक तथा ब्रिटिश मेहमानों के लिए अच्छा केन्द्र रही है। आज भी गौरा महाशीर पकड़ने के लिए अच्छी सम्भावनाएं प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त पौंटा साहिब में यमुना नदी का कुछ भाग मछली पकड़ने का अच्छा केन्द्र है।

लारजीः–

राष्ट्रीय उच्च मार्ग 21 पर ऑट से 7 किलो मीटर की दूरी पर तीर्थन नदी में ट्राऊट एंगलिंग का एक आदर्श स्थान है। यहां पर हिमाचल प्रदेश लोक निर्माण विभाग का विश्राम गृह तथा मत्स्य विभाग का उप–निरीक्षक कार्यालय स्थित है। **हिमाचल सरकार ने तीर्थन नदी को एंगलिंग रिजर्व घोषित किया है,** तथा तीर्थन व इसकी सहायक नदियों पर कोई भी जल विद्युत परियोजना न लगाने का एतिहासिक निर्णय लिया है। विभाग द्वारा प्रतिवर्ष ब्राऊन ट्राऊट तथा रेनबो ट्राऊट की अगुलिकायें इस नदी में संग्रहित की जाती हैं। लारजी से 20 किलो मीटर धारा के ऊपर के भाग में लगभग सभी एंगलर संतुष्ट होकर जाते हैं।

एंगलर कृपया ध्यान दें :–

वैज्ञानिक प्रमाणों से साबित हुआ है कि एंगलरों के उपकरणों द्वारा कुछ ANS(Aquqtic Nuisance Species) प्राजातियों जैसे कि व्हर्लिंग रोग जीवाणु, डिडाइमों तथा न्यूजीलैंड मड स्नेल का स्थानान्तरण सम्भव है। अपने छिद्रपूर्ण आकार के कारण कम्बलनुमा जूते कुछ अन्य ANS को भी संचारित कर सकते हैं। मछली स्वास्थ्य व्यवसाय से जुड़े लोग, जीवविज्ञानिक वेत्ता (Biologist) तथा अन्य लोग अपने उपकरणों का रासायनिक उपचार कर सकते हैं। परन्तु ANS को खत्म करने के लिए कोई भी एकल रासायनिक उपचार नहीं है। इसलिए Trout Anlimited (Tu) यह सलाह देता है कि एंगलर अपने उपकरणों को जांच कर साफ तथा सुखा रखें। नदी नालों के बीच यात्रा करते समय अपने उपकरणों को तलछट मलबे तथा पौधों के लिए जांच लें। जूतों की सिलवटों को साफ करने के लिए एक नर्म ब्रश का प्रयोग करें, तथा साफ पानी से अच्छे से धोयें, हो सके तो गर्म पानी का प्रयोग करें। जब भी सम्भव हो, अपने उपकरणों को सुखा लें। सूखने की क्रिया से कुछ ANS मर जाते हैं। इसलिए यह एक अच्छी प्रक्रिया है। इन सरल तरीकों से सभी ANS खत्म करने की गारंटी नहीं है, परन्तु ये इन्हें फैलने से रोकेगा तथा हमारे कीमती ट्राऊट संसाधनों की रक्षा करने में सहायता मिलेगी।

याद रखने योग्य बातें:–

किसी भी मछली, पौधे या जानवर, जीवित अथवा मृत को जल निकायों के बीच परिवहन न करें। सभी उपकरणों की जांच, सफाई कर लें तथा उन्हें सुखा रखें।

एंगलरों के लिए रोकथाम के तरीके :–

व्हर्लिंग रोग :– मीक्सोबोलस सैरीब्रैलिस (Myxobolus, Cerebralis) (MC) एक परजीवि है, जो अंगुलिकाओं को सिर व रीढ़ की हड्डी में जाकर तेजी से फैलाता है। जिसके कारण मछली की मृत्यु हो जाती है। तब लाखों छोटे–2 अविनाशी (MC) जीवाणु पानी में छोड़ दिये जाते हैं। जो इस निष्क्रीय रूप में लगभग 30 साल तक जीवित रह सकते हैं। जब इन जीवाणुओं को ट्यूबीफैक्स कीड़े द्वारा निगला जाता है, तब ये अति संक्रमित रूप ट्राई एकटीनों मिक्सौन (TAM) में बदल कर छोड़ दिये जाते है। TAM पानी में तब तक तैरते रहते हैं, जब तक वे ट्राऊट को संक्रमित न कर लें। इसके कारण रीढ़ की हड्डी में विकृत हो जाती है, तथा आहार लेने की क्षमता भी घट जाती है। व्हर्लिंग रोग रेनबो तथा कट थ्रोट ट्राऊट के लिए सबसे अधिक संक्रमित करने वाला है, परन्तु यह अन्य सभी सालमोनिड प्रजातियों को भी संक्रमित कर सकता है।

संक्रमित मछली कैसी दिखती है ?

व्हर्लिंग रोग के विशिष्ट लक्षण हैं – गहरे रंग की पूंछ, मुड़ी हुई रीढ़ तथा विकृत सिर (छोटा, मुड़ा हुआ जबड़ा) छोटी मछलियां अनियमित तौर पर भी तैरती हैं। हालांकि अन्य रोग तथा अनुवांशिक स्थितियां भी इन लक्षणों का कारण हो सकती हैं। यदि आप इन लक्षणों वाली मछली देखते हैं, जहां व्हर्लिंग रोग कभी नहीं पाया गया है तो अपने राज्य की मात्स्यिकी एजैंसी से सम्पर्क करें।

व्हर्लिंग रोग कैसे फैलता है ?

व्हर्लिंग रोग फैलने का प्रमुख कारण संक्रमित मछली संग्रहण या उसका पानी में प्राकृतिक रूप से पाया जाना है। इसके अतिरिक्त पक्षियों तथा मनुष्यों द्वारा भी यह परजीवी फैलाया जा सकता है। नाव चालकों तथा एंगलरों का इसमें विशेषकर योगदान होता है।

क्या व्हर्लिंग रोग को फैलाने से रोकने में एंगलर या नावचालक सहायक हो सकते हैं ?

एंगलर, नावचालक तथा अन्य लोग व्हर्लिंग रोग को फैलने से रोकने के लिए सहायक हो सकते हैं। निम्नलिखित सावधानियों से न केवल रोगों को फैलने से रोका जा सकता है, अपितु अन्य रोग फैलाने वाले जीवों तथा जलीय कीटों से भी बचा जा सकता है–

1. कभी–भी जीवित मछली एक पानी के स्त्रोत से दूसरे पानी के स्त्रोत में न ले जाएं (कुछ राज्यों में यह गैर कानूनी है)।
2. ट्राऊट, व्हाइट फिश या सालमन के टुकडों को चारे के रूप में प्रयोग न करें।
3. मछली की आन्तों तथा हड्डियों को सही तरीके से फैंकें। कभी–भी मछली के अंगों को नदी या नालों के पास या उनमें नहीं फेंकना चाहिए। संक्रमित मछली में हजारों रोग जीवाणु हो सकते हैं जो साफ पानी में भी laØeण फैला सकते हैं। मछली के अंगो को रसोई के कुड़े के साथ भी नहीं फेंकना चाहिए क्योंकि व्हर्लिंग रोग के मिक्सोस्पोर ज्यादातर अपशिष्ट जल उपचार प्रणाली (Waste Water Treatment System) में जीवित रह सकते हैं। इसके बदले इसे सूखे बेकार कचरे के साथ फेंक देना चाहिए।
4. सभी उपकरणों से कचरा व मलवा धो लेना चाहिए तथा नाव से पानी निकाल लेना चाहिए। यह अन्य जलीय जीवाणुओं व कीटों के परिवहन को भी रोकता है।
5. हांलाकि उपरोक्त सभी सावधानियां आप के उपकरणों से ज्यादातर जीवाणुओं को खत्म कर सकती है परन्तु निम्नलिखित उपाय अतिसंक्रमित पानी में सहायता कर सकते हैं। अपने जूतों को तथा अन्य उपकरणों को धोकर सूखा लें। प्रायः यह उपाय परजीवी के TAM चरणों को खत्म करने के लिए पर्याप्त है।
6. क्लोरीन (घरेलू ब्लीच) एक प्रभावी रोगाणुनाशी है तथा उचित मात्रा में प्रयोग करने पर परजीवी के लगभग सभी चरणों को खत्म कर सकता है।

क्लोरीन बहुत तेज रासायनिक है तथा लम्बे समय के इस्तेमाल से आपके उपकरणों को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए अपने उपकरणों को विसंक्रमित करने के बाद साफ पानी से धोकर छाया में सूखा लें।

7. TAM को खत्म करने के लिए एक भाग क्लोरीन तथा 32 भाग पानी का प्रयोग करें। पूर्ण विसंक्रमण हेतू इसे लगभग 10 मिनट तक छोड़ दें।
8. मिक्सोस्पोर मलवे में पाये जाते हैं तथा इन्हें उपकरणों से खत्म करना बहुत कठिन होता है। 50 प्रतिशत घोल (एक भाग क्लोरीन तथा एक भाग पानी) में अपने उपकरणों को डुबोयें या इससे पोछें।
9. 10 प्रतिशत घोल (एक भाग क्लोरिन तथा 9 भाग पानी)– इस घोल में अपने उपकरणों को 10 मिनट तक डूबोयें। क्वार्टनरी अमोनियम कम्पाऊण्ड भी परजीवी के दोनों चरणों को नष्ट कर सकते हैं। यह रोगाणुनाशक बाजार में उपलब्ध होते हैं जिनसे मछली पकड़ने के उपकरण विसंक्रमित किये जा सकते हैं।
10. उबलता हुआ गर्म पानी भी इतना ही प्रभावी होता है। इसे उपकरणों पर सीधा डाल दें तथा ठण्डा होने दें।

राज्य सरकार तथा अन्य संस्थाएं किस प्रकार सहायता कर सकती है?

1. नाव रोकने के स्थान पर तथा संक्रमित जलों वाले मछली पकड़ने के स्थानों पर उपकरणों को धोने के लिए साफ पानी तथा नाली का प्रबन्ध करवाया जा सकता है।
2. नाली के पास जूतों को धोने के लिए ब्रश उपलब्ध कराया जा सकता है।
3. मछली पकड़ने के लोकप्रिय स्थानों पर व्हर्लिंग रोग वाले जलों का नक्शा दिखाया जा सकता है जिससे एंगलरों को संक्रमित जलों के बारे में जानकारी दी जा सके।
4. ANS तथा MC को फैलने से रोकने के लिए निर्देश जारी करें।

सौजन्यः– ट्राऊट अनलिमिटिड (TU)